International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 730-731

प्रेमचन्द के उपन्यासों में नारी संवेदना

मीतो देवी
गांव–धाबी टेक सिंह, नरवाना, जीन्द, हरियाणा, भारत।

सारांश
भारतीय समाज में महिलाओं पर अत्याचार होना कोई नई बात नहीं है जहाँ पुरुष वर्चस्व को बरकरार रखने के लिए हमेशा महिलाओं के स्वाभिमान और उनके जीवन की आहुति दी जा रही है। वह कभी अपने साथ हो रहे दुर्व्यवहार और अत्याचार के विरोध में अपनी आवाज़ नहीं उठा पाई क्योंकि कहीं न कहीं वह यह जानती थी कि रस पुरुष प्रधान समाज में उसकी बात कोई नहीं बुनेगा इसलिए अपने इसी जीवन को अपनी नियति मानती हुई वह सब कुछ सहन करना ही अपने और अपने परिवार के लिए बेहतर समझती थी।

मूल शब्द: प्रेमचंद के उपन्यास में, नारी चरित्र, संवेदना व ग्रहिणी जीवन

प्रस्तावना

मुख्य धारा : प्रेम चन्द युग–द्रष्टा साहित्यकार थे। उनके आर्विभाव से ही हिन्दी में एक नये युग का सूत्रपात होता है वे एक सजग व सचेत कहानीकार थे। जहां एक ओर वे भारत की प्राचीन उपदेश प्रधान शल्य–परम्परा से परिचित थे इनके उपन्यासों में जो नारी संवेदना देखने को मिलती है शायद किसी दूसरे उपन्यासकार के लेखन कार्य में नहीं मिलेगी वह अपने युग के उपन्यास सम्राट भी कहे जाते हैं।

प्रेमचन्द के उपन्यासों में नारी संवेदना पर गहरा चिन्तन किया गया है। उनके उपन्यासों में नारी संवेदना को साथ–साथ नारी समस्याओं को भी उजागर किया गया है। प्रेमचन्द के उपन्यास आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद पर आधारित उपन्यास कहे जाते हैं। क्योंकि उनसे दिखाया गया है कि किस प्रकार हमारे समाज में नारियों को कदम–कदम पर विभिन्न समस्याओं को झेलना पड़ता है। उनके प्रमुख उपन्यास 'सेवासदन' में नारी की संवेदना और समस्या दोनों का मार्मिक रूप से चित्रण किया गया है।

सेवासदन उपन्यास में 'सुमन' की संवेदना को दर्शाया है, वह एक सुन्दर व सुशील लड़की थी। परंतु दहेज न देने के कारण उसकी शादी एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ की जाती है। जिसके कारण सुमन को अपना जीवन नरक लगने लगता है और यही कारण उसे एक दिन गलत रास्ते पर जाने के लिए मजबुर कर देता है गरीबी से तंग आकर और अपने से अधिक उम्र के व्यक्ति से शादी का होना उसे वैश्यावृत्ति जैसे दलदल में फंसने पर मजबूर हो जाती है। तब वह भोली नामक वैश्या के संपर्क में आती है और उससे अपने दिल की बात कहती है।

''उसकी तो सूरत देखने को जी नहीं चाहता।अब तुमसे क्या छिपाऊँ अभी परसों वकील साहब के यहां तुम्हारा मुजरा हुआ था। उनकी स्त्री मुझसे प्रेम रखती है। उन्होंने मुझे मुजरा देखने के लिए बुलाया और बारह बने तक मुझे आने न दिया। जब तुम्हारा गाना खत्म हो चुका तो मैं घर लाई। बस, इतनी–सी बात पर वह इतने बिगड़ गए कि जो मुंह में आया, बकते रहे। यहां तक कि वकील साहब से भी पाप लगा दिया। कहने लगे, चली जा, अब सूरत न दिखाना। बहन, मैं ईश्वर को बीच देकर कहती हूँ, मैंने उन्हें मनाने का बड़ा यत्न किया। रोई पैर पड़ी पर उन्होंने घर से निकाल ही दिया।''

अतः नारी को कदम–कदम पर विभिन्न बाधाओं का सामना करना पड़ता है। निर्मला उपन्यास में प्रेमचन्द ने दहेज समस्या व अनमेल–विवाह की समस्या को प्रमुख रूप से उठाया है। आकस्मिक रूप से निर्मला के पिता की हत्या हो जाने पर उसका मंगेतर उसका पिता निर्मला से नाता तोड़ लेते हैं। अतः धनाभाव में उसका विवाह तीन पुत्रों के पिता चालीस वर्षीय दुहाज मुंशी तोताराम के साथ हो जाता है। यद्यपि निर्मला में भारतीय नारी के गुणों के साथ–साथ मानवता भी है। वह अपने सौतेले पुत्रों से सच्चा स्नेह करती है। फिर भी मुंशी तोताराम निर्मना के इस निश्छल व्यवहार को शंका की दृष्टि से देखते हैं। वह अपने बड़े पुत्र मंसाराम और निर्मला पर शक करते रहते हैं जिससे तंग आकर निर्मला कहती है।

"उस लड़के ने कभी मेरी और आँख उठाकर नहीं देखा, लेकिन बुड़ढ़े शक्की तो होते ही है तुम्हारे जीजा उस लड़के के दुश्मन हो गए, और आखिर उसकी जान लेकर ही छोड़ी। जिस दिन से उसे ज्वर चढ़ा तो जान लेकर ही उतरा। हाय ! उस अंतिम समय का दृश्य आंखों से ही उतरा में अस्पताल गई थी, वह ज्वर में बेहोश पड़ा था – उठने की शक्ति न थी, लेकिन ज्यों ही मेरी आवाज सुनी, चौंककर और 'माता–पिता' कहकर मेरे पैरों पर गिर पड़ा। इस तरह मुंशी तोताराम की शंका दुर हुई और बेटा मंसाराम दुनिया से चल बसे। यद्यपि इन दोनों ही घटनाओं में मुंशी प्रेमचन्द ने यथार्थ का चित्रण किया है।''

गबन उपन्यास में प्रेमचन्द ने मध्य–वर्ग की आडम्बरपूर्ण जीवन शैली का चित्रण किया है। मध्यवर्ग की युवतियाँ सोने के आभूषणों पर अपने प्राण देती है। इसके कारण बहुत से परिवार आर्थिक संकटों में फंस जाते हैं। इसके साथ–साथ उन्होंने समाज के जाति–पाति के भेदभाव, धर्म के नाम पर किए जाने आडम्बरों का भी चित्रण किया है। इसउ उपन्यास का नायक रमानाथ ऐशो आराम से रहने की अभिलाषा रखता है। विवाह होने के पश्चात् वह नगरपालिका की चुंगी में क्लर्क बन कर तीस रुपये महीना पाता है परंतु रमानाथ व उसका पिता दयानाथ दोनों ही आवश्यकता से अधिक धन का अपव्यय करते हैं फूलतः विवाहोपरांत सुनार का कर्ज उतारने में असमर्थ ये पिता पुत्र नवविवाहिता जालपा के आभूषण चोरी करके सुनार को लोटा देते हैं। उसके बाद अपनी पत्नी जालपा की हर

इच्छा पुरी करने के लिए वह सरकारी कार्यालय में गबन का आरोपी बन जाता है और पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेती है। जब जालपा का पति रमानाथ कलकत्ता भाग जाता है। तब जालपा आभूषण–प्रियता को ही इस गबन का कारण मानती है और कहती है:–

''मैं वैश्या नही हूँ कि तुम्हें नोच–खसोटकर अपना रास्ता लूँ। मुझे तुम्हारे साथ जीना और मरना है। अगर मुझे सारी उम्रबेगहनों के रहना पड़े, तो भी मैं कर्ज लेने को न कहूंगी। औरतें गहनों के इतनी भूखी नहीं होती। घर के प्राणियों को संकट में डालकर गहनें पहनने वाली दूसरी होंगी।''

अन्ततः पत्नी के सद्गुण व उनके आदर्श बलिदान से पति रमानाथ का हृदय पिघल जाता है तथा वह न्यायालय में सभी तथ्यों का सत्य व निष्ठापूर्वक विवरण देकर स्वयं को उस झूठे केस की दलदल से बाहर निकाल आता है। वह अपने माता–पिता, वृद्ध देवीदीन व उसकी जग्गो, वैश्या जोहरा व विधवा रतन को अपने साथ रखता है। तथा उन सभी के जीवन को सुखमय बनाने के लए कठोर परिश्रम करता है। इस प्रकार रमानाथ भी स्वार्थ के धरातल से उठकर परोपकारी के स्तर पर पहुँच जाता है। प्रेमचन्द ने इस पात्र के माध्यम से भी 'गबन' में अपन आदर्शोन्मुखी यथार्थ को प्रकट किया है।

प्रेमचन्द के उपन्यासों में जहां नारी अपनी इच्छा पूरी करने के लिए थोड़ी स्वार्थी हो जाती है वहीं नारी बहुत संवेदनशील भी होती है।अनेक बाधाओं का सामना करके जालपा अपने परिवार को मुसीबतों से निकालती है।इस तरह प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में नारी के आदर्श रूप का भी वर्णन किया है।

'कर्मभूमि' उपन्यास में भी प्रेमचन्द ने नारी की संवेदना को दर्शाया। उन्होंने नारी की मार्मिक दशा का वर्णन किया है। इस उपन्यास में मुन्नी की संवेदना का मार्मिक वर्णन किया गया है कि किस प्रकार अंग्रेजों द्वारा उसका बलात्कार किया जाता है। और वह अपने आपको समाज के सामने नहीं आने देना चाहती। क्योंकि उसकी सबसे अमूल्य वस्तु को दो अंग्रेज गोरों द्वारा चुरा लिया गया था उन गौरों का वर्णन करते हुए प्रेमचन्द जी कहते हैं कि यह उस श्रेणी के गोरे थे जो अपनी आत्मा को शराब और जुए के हाथों बेच देते हैं। बल्कि फर्स्ट क्लास में सफर करते है, होटल वालों को धोखा देकर उड़ जाते हैं और जब कुछ बस नहीं चलता, तो बिगड़े हुए शरीफ बनकर भीख मांगते हैं, सहसा एक भिखारिन ने छुरी निकालकर एक पर वार किया। छुरी उसके मुंह पर आ रही थी। उसने घबराहट मुंह पीछे हटाया तो छाती में घुस गयी वह तो तांगे पर ही हाय–हाय करने लगा। शेष दोनों गोरे–तांगें से उतर पड़े और हुंकार पर आकर प्राणरक्षा करना चाहते थे कि भिखारिन दुसरे गोरे पर भी वार कर दिया।

इस तरह मुन्नी ने अपनी खोई हुई इज्जत का बदला लेने के लिए दोनों अंग्रेज गोरों को मार गिराया। जब मुन्नी का मुकदमा कोर्ट में चला जाता है तो मुन्नी स्पष्ट स्वर में कहती है –*''मुझे कुछ नहीं कहना है। अपने प्राणों को बचाने के लिए मैं कोई सफाई नहीं देना चाहती। मैं तो यह सोचकर प्रसन्न हूं कि जल्द जीवन का अन्त हो जाएगा। मैं दीन, अबला हूँ, मुझे इतना ही याद है कि कई महीने पहले मेरा सर्वस्व लूह लिया गया और उसके लूह जाने पर मेरा जीना–वृथा है। मैं उसी दिन मर चुकी।''*

इस तरह मुन्नी की उपन्यास संवेदनशीलताको दर्शाया गया है।

प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास 'गोदान' में की नारी की संवेदनशीलता को प्रकट किया है।इस उपन्यास में उन्होंने अनमोल विवाह की समस्या और विधवा विवाह आदि को दर्शाया है। एक जगह पर सुनिया रोती हुई कहती है – *''अम्मां, जब अपना बाप होके धिक्कार रहा है, तो मुझे डूब ही मरने दो।''*

नारी को कदम–कदम पर मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। सेवासदन उपन्यास में सुमन का पति गजाधर ने लांछनायुक्त शब्दों में कहा – ''अच्छा, तो अब वकील साहब से मन मिला है, यह कहो। फिर भला, मजदूर की परवाह क्यों होने लगी?

इसी प्रकार 'गोदान' उपन्यास में भी नारी को विभिन्न बाधाओं का सामना करना पड़ता है। छुआछुत व जात–पात के कारण भी नारी की संवेदनशीलता दर्शाया गया है। सिलिया का तन और मन दोनों लेकर भी बदले में कुछ न देना चाहता था। सिलिया अब उसकी निगाह में केवल वह काम करने की मशीन थी और कुछ नहीं।

क्योंकि मातादीन एक ब्राह्मण था और सिलिया चमारिन कायाकल्प उपन्यास में भी समाज का यथार्थ चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में दिखाया गया है कि किस प्रकार नारी को अपनी इज्जत बचाने के लिए किसी को मौत के घाट उतारना पड़ता है, प्रेमचन्द ने नारी पात्र अहिल्या का वर्णन करते हुए कहा है।

''ख्वाजा – यह वही बदमाश है, जिसकी लाश तुम्हारे सामने पड़ी हुई है। वह इसी की हरकत थी।मैं तो सारे शहर में अहिल्या को तलाश करना था और वह मेरे ही घर में कैद यह जालिम उस पर जबरन करना चाहता था। आज उसने मौका पाकर इसे जहन्नुम का रास्ता दिखा दिया।''

अतः हम कह सकते हैं कि नारी को हर समय विभिन्न समस्याओं से झेलना पड़ता है जो यहां देखने को मिलती रहती है। केवल प्रेमचन्द ने ही नहीं बल्कि सम्बन्धित साहित्य विद्वानों ने भी समय–समय पर अपने उपन्यासों व लेखन कार्यों में नारी महिमा की दुर्दृया को दिखाया है। जो एक पुरूङ्ख प्रधान देृय की और नारी अधिकारों को कमजोर दिखाने में लगे रहे हैं।

संदर्भ

1. सेवासदन, प्रेमचन्द, वाणी प्रकाशन 21–ए दरियागंज, नई दिल्ली पेज नं. 43 संस्करण 2002
2. निर्मला, प्रेमचन्द, वाणी प्रकाशन 21ए दरियागंज नई दिल्ली पृ॰100
3. गबन, प्रेमचन्द, प्रकाशन संस्थान–नई दिल्ली संस्करण 2011,पृ॰38
4. कर्मभूमि, प्रेमचन्द, प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली संसकरण 2011, पृ॰ 39
5. कर्मभूमि, प्रेमचन्द,प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली,संस्करण 2011,पृ॰ 44
6. गोदान, प्रेमचन्द, प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली, संस्करण, 2002, पृ॰ 142
7. सेवासदन, प्रेमचन्द, वाणी प्रकाशन 21ए दरियागंज नई दिल्ली पृ॰35 संस्करण–2002
8. गोदान, प्रेमचन्द प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, पृ॰ 226
9. कायाकल्प, प्रेमचन्द, वाणी प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2002, पृ॰ 179 179